

سُورَةُ الدُّخَانِ

Surah 44 — Ad-Dukhaan (The Smoke) · Meccan · 59 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

हा मीम

2

وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ

वाज़ेए व रौशन किताब (कुरान) की क़सम

3

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُبَارَكَةٍ ۚ إِنَّا كُنَّا مُنْذِرِينَ

हमने इसको मुबारक रात (शबे क़द्र) में नाज़िल किया बेशक हम (अज़ाब से) डराने वाले थे

4

فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ

इसी रात को तमाम दुनिया के हिक़मत व मसलेहत के (साल भर के) काम फ़ैसले किये जाते हैं

5

أَمْرًا ۚ أَمَّا مَنْ عِنْدَنَا ۚ إِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ

यानि हमारे यहाँ से हुक्म होकर (बेशक) हम ही (पैग़म्बरों के) भेजने वाले हैं

6

رَحْمَةً ۚ مِنْ رَبِّكَ ۚ إِنَّهُ ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

ये तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी है, वह बेशक बड़ा सुनने वाला वाकिफ़कार है

7

رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ إِن كُنْتُمْ مُوقِنِينَ

सारे आसमान व ज़मीन और जो कुछ इन दोनों के दरमियान है सबका मालिक

8

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي ۚ وَيُمِيتُ ۚ رَبُّكُمْ وَرَبُّ ءَابَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ

अगर तुममें यक्रीन करने की सलाहियत है (तो करो) उसके सिवा कोई माबूद नहीं - वही जिलाता है वही मारता है तुम्हारा मालिक और तुम्हारे (अगले) बाप दादाओं का भी मालिक है

9

بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ ۖ يَلْعَبُونَ

लेकिन ये लोग तो शक में पड़े खेल रहे हैं

10

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ۚ

तो तुम उस दिन का इन्तेज़ार करो कि आसमान से ज़ाहिर ब ज़ाहिर धुआँ निकलेगा

11

يَغْشَى النَّاسَ ۚ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ

(और) लोगों को ढाँक लेगा ये दर्दनाक अज़ाब है

12

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ

कुफ़्कार भी घबराकर कहेंगे कि परवरदिगार हमसे अज़ाब को दूर दफ़ा कर दे हम भी ईमान लाते हैं

13

أَنَّى لَهُمُ الذِّكْرَى وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ ۚ

(उस वक्त) भला क्या उनको नसीहत होगी जब उनके पास पैग़म्बर आ चुके जो साफ़ साफ़ बयान कर देते थे

14

ثُمَّ تَوَلَّوْا ۖ عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ مَجْنُونٌ

इस पर भी उन लोगों ने उससे मुँह फेरा और कहने लगे ये तो (सिखाया) पढ़ाया हुआ दीवाना है

15

إِنَّا كَاشِفُو الْعَذَابِ قَلِيلًا ۚ إِنَّكُمْ عَائِدُونَ

(अच्छा ख़ैर) हम थोड़े दिन के लिए अज़ाब को टाल देते हैं मगर हम जानते हैं तुम ज़रूर फिर कुफ़्र करोगे

16

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَىٰ إِنَّا مُنتَقِمُونَ

हम बेशक (उनसे) पूरा बदला तो बस उस दिन लेगें जिस दिन सख्त पकड़ पकड़ेंगे

17

﴿۱﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ رَسُولٌ كَرِيمٌ

और उनसे पहले हमने क्रौमे फिरऔन की आजमाइश की और उनके पास एक आली क़दर पैग़म्बर (मूसा) आए

18

أَنۢ أَدۡوَا۟ا۟ ۖ إِلَىٰ عِبَادِ اللَّهِ ۖ إِنِّي لَكُمۡ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ

(और कहा) कि खुदा के बन्दों (बनी इसराईल) को मेरे हवाले कर दो मैं (खुदा की तरफ से) तुम्हारा एक अमानतदार पैग़म्बर हूँ

19

وَأَنۢ لَا تَعۡلُوا۟ ۖ عَلَىٰ اللَّهِ ۖ إِنِّي ءَاتِيكُم بِسُلۡطٰنٍ مُّبِينٍ ۖ

और खुदा के सामने सरकशी न करो मैं तुम्हारे पास वाज़ेए व रौशन दलीलें ले कर आया हूँ

20

وَإِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمۡ أَن تَرْجُمُونِ

और इस बात से कि तुम मुझे संगसार करो मैं अपने और तुम्हारे परवरदिगार (खुदा) की पनाह मांगता हूँ

21

وَإِن لَّمۡ تُوۡمِنُوا۟ ۖ لِي فَاَعۡتٰزِلُنِ

और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाए तो तुम मुझसे अलग हो जाओ

22

فَدَعَا رَبَّهُۥ ۖ أَنۡ هُوَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُونَ

(मगर वह सुनाने लगे) तब मूसा ने अपने परवरदिगार से दुआ की कि ये बड़े शरीर लोग हैं

23

فَآسَرۡ بِعِبَادِي لَيْلًا ۖ إِنَّكُمۡ مُّتَّبِعُونَ

तो खुदा ने हुक्म दिया कि तुम मेरे बन्दों (बनी इसराईल) को रातों रात लेकर चले जाओ और तुम्हारा पीछा भी ज़रूर किया जाएगा

24

وَأَتْرَكَ الْبَحْرَ رَهْوًا ۚ إِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُونَ

और दरिया को अपनी हालत पर ठहरा हुआ छोड़ कर (पार हो) जाओ (तुम्हारे बाद) उनका सारा लश्कर डुबो दिया जाएगा

25

كَمْ تَرَكَوْا ۚ مِنْ جَنَّتٍ وَعُيُونٍ ۚ

वह लोग (खुदा जाने) कितने बाग़ और चश्में और खेतियाँ

26

وَزُرُوعٍ ۚ وَمَقَامٍ ۚ كَرِيمٍ ۚ

और नफीस मकानात और आराम की चीज़ें

27

وَنَعْمَةٍ ۚ كَانُوا فِيهَا فُكْهِينَ

जिनमें वह ऐश और चैन किया करते थे छोड़ गये यूँ ही हुआ

28

كَذَلِكَ ۚ وَأَوْرَثْنَاهَا قَوْمًا ءَاخِرِينَ

और उन तमाम चीज़ों का दूसरे लोगों को मालिक बना दिया

29

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنْظَرِينَ

तो उन लोगों पर आसमान व ज़मीन को भी रोना न आया और न उन्हें मोहलत ही दी गयी

30

وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِ

और हमने बनी इसराईल को ज़िल्लत के अज़ाब से फिरऔन (के पन्जे) से नजात दी

31

مِنْ فِرْعَوْنَ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَلِيًّا ۚ مِّنَ الْمُسْرِفِينَ

वह बेशक सरकश और हद से बाहर निकल गया था

32

وَلَقَدْ اخْتَرْنَهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَىٰ الْعَالَمِينَ

और हमने बनी इसराईल को समझ बूझ कर सारे जहाँ से बरगुज़ीदा किया था

33

وَعَاتَيْنَهُمْ مِّنَ آلِ إِبْرَاهِيمَ مَا فِيهِ بَلَاءٌ ۖ مُّبِينٌ

और हमने उनको ऐसी निशानियाँ दी थीं जिनमें (उनकी) सरीही आजमाइश थी

34

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ

ये (कुफ़ारे मक्का) (मुसलमानों से) कहते हैं

35

إِنْ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِينَ

कि हमें तो सिर्फ एक बार मरना है और फिर हम दोबारा (ज़िन्दा करके) उठाए न जाएँगे

36

فَاتُوا ۖ بِآبَائِنَا إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ

तो अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादाओं को (ज़िन्दा करके) ले आओ

37

أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَعٍّ ۚ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ أَهْلَكْنَاهُمْ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا ۖ مُجْرِمِينَ

भला ये लोग (कूवत में) अच्छे हैं या तुब्बा की कौम और वह लोग जो उनसे पहले हो चुके हमने उन सबको हलाक कर दिया (क्योंकि) वह ज़रूर गुनाहगार थे

38

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لِعِبِينَ

और हमने सारे आसमान व ज़मीन और जो चीज़े उन दोनों के दरमियान में हैं उनको खेलते हुए नहीं बनाया

39

مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

इन दोनों को हमने बस ठीक (मसलहत से) पैदा किया मगर उनमें के बहुतेरे लोग नहीं जानते

40

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقَتُهُمْ أَجْمَعِينَ

बेशक फ़ैसला (क़यामत) का दिन उन सब (के दोबार ज़िन्दा होने) का मुक़रर वक्त है

41

يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلَى عَنْ مَوْلَى شَيْءٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ

जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ काम न आएगा और न उन की मदद की जाएगी

42

إِلَّا مَنْ رَحِمَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ ۚ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ

मगर जिन पर खुदा रहम फरमाए बेशक वह (खुदा) सब पर ग़ालिब बड़ा रहम करने वाला है

43

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ

(आखेरत में) थोहड़ का दरख्त

44

طَعَامُ الْأَثِيمِ

ज़रूर गुनेहगार का खाना होगा

45

كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ

जैसे पिघला हुआ तांबा वह पेटों में इस तरह उबाल खाएगा

46

كَغَلَى الْحَمِيمِ

जैसे खौलता हुआ पानी उबाल खाता है

47

خُذُوهُ فَأَعْتَلُوهُ إِلَى سَوَاءِ الْجَحِيمِ

(फरिश्तों को हुक्म होगा) इसको पकड़ो और घसीटते हुए दोज़ख के बीचों बीच में ले जाओ

48

ثُمَّ صُبُّوا[؟] فَوْقَ رَأْسِهِ[؟] مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ

फिर उसके सर पर खौलते हुए पानी का अज़ाब डालो फिर उससे ताआनन कहा जाएगा अब मज़ा चखो

49

ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ

बेशक तू तो बड़ा इज्ज़त वाला सरदार है

50

إِنَّ هَذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ[؟] تَمْتَرُونَ

ये वही दोज़ख तो है जिसमें तुम लोग शक़ किया करते थे

51

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامِ أَمِينٍ[؟]

बेशक परहेज़गार लोग अमन की जगह

52

فِي جَنَّتٍ[؟] وَعُيُونٍ[؟]

(यानि) बागों और चश्मों में होंगे

53

يَلْبَسُونَ مِنْ سُندُسٍ[؟] وَإِسْتَبْرَقٍ[؟] مُتَقَابِلِينَ

रेशम की कभी बारीक और कभी दबीज़ पोशाकें पहने हुए एक दूसरे के आमने सामने बैठे होंगे

54

كَذَلِكَ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ[؟]

ऐसा ही होगा और हम बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरों से उनके जोड़े लगा देंगे

55

يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فُكْهَةٍ ءَامِنِينَ

वहाँ इत्मेनान से हर किस्म के मेवे मंगवा कर खायेंगे

56

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ ۚ وَوَقَّاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ

वहाँ पहली दफ़ा की मौत के सिवा उनको मौत की तलखी चखनी ही न पड़ेगी और खुदा उनको दोज़ख के अज़ाब से महफूज़ रखेगा

57

فَضْلًا ۚ إِنَّ مِّن رَّبِّكَ ۚ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

(ये) तुम्हारे परवरदिगार का फज़ल है यही तो बड़ी कामयाबी है

58

فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ

तो हमने इस कुरान को तुम्हारी ज़बान में (इसलिए) आसान कर दिया है ताकि ये लोग नसीहत पकड़ें तो

59

فَأَرْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُونَ

(नतीजे के) तुम भी मुन्तज़िर रहो ये लोग भी मुन्तज़िर हैं